RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर का उनके विद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

[1]डा0 नीलम कुमारी; [2]बृजपाल सिंह

[1]असि0प्रो0, शिक्षा संकाय, एस0एस0जे0 कैम्पस, अल्मोडा, कुमांऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल
[2]शोधार्थी, शिक्षा संकाय, एस0एस0जे0 कैम्पस, अल्मोडा, कुमांऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
प्रसन्नता स्तर एवं विद्यालय वातावरण।

ABSTRACT

प्रसन्नता महसूस करना बहुत आसान है और वर्णन करना मुश्किल है। प्रसन्नता केवल सकारात्मक सोच रखने और जीवन का आनंद लेने से प्राप्त की जा सकती है। वर्तमान समय में विश्व के सभी देशों में आज विकास के पथ पर एक दूसरे से आगे निकल जाने की होड़–सी मची है, और इसके लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। शिक्षा विकास की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संसाधनों को एकत्रित करने का कार्य शिक्षा द्वारा किया जाता है। मानव विकास में शिक्षा एक महत्वपूर्ण पहलू है किन्तु वर्तमान समय में शैक्षिक संस्थाओं में विद्यार्थियों का जीवन तनाव, चिन्ता और निराशा आदि से भरा हुआ है, जोकि उनके द्वारा अनुशासनहीनता, आक्रमकता आदि के रूप में परिलक्षित होता है। वर्तमान शोध में शोधार्थी ने उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर को जानने हेतु अध्ययन का चयन किया। अध्ययन का उददेश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर का उनके निवास स्थान एंव विद्यालय वातावरण के संदर्भ में अध्ययन करना है। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा अल्मोडा जनपद के 6 विकासखण्डों के अर्न्तगत 25 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से 546 ग्रामीण तथा 304 शहरी विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु पियर्सन सहसम्बंध गुणांक का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रसन्नता स्तर एवं विद्यालय वातावरण के आयाम संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, सृजनात्मक उददीपन एवं अनुमोदन में सार्थक धनात्मक सह–सम्बंध तथा अस्वीकृति में सार्थक ऋणात्मक सह–सम्बंध पाया गया है। प्रसन्नता स्तर एवं विद्यालय वातावरण के आयाम स्वीकृति एवं नियंत्रण के मध्य सार्थक सह–सम्बंध नहीं पाया गया है।

प्रस्तावना

मनुष्य अपने जीवन स्तर में सुधार करने के लिए प्रयासरत रहता है। प्रत्येक माता–पिता चाहता है कि उनका बच्चा अच्छा जीवन व्यतीत करे, इसके लिए वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने का प्रयास करते है। शिक्षा किसी व्यक्ति की प्रसन्नता को प्रत्यक्षतः गहरे ढंग से प्रभावित करती है। व्यक्ति की आर्थिक, पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति शिक्षा द्वारा अच्छी होती है जिससे उसके अन्दर स्वः प्रसन्नता का भाव उजागर होना स्वाभाविक है। प्रसन्नता या खुशी प्रकृति प्रदत्त है और इसको हम पैसों से नहीं खरीद सकते है। खुशी का कोई दूसरा शॉर्टकट नही है इसे सिर्फ अपने भीतर से महसूस किया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा पारित प्रस्ताव के अनुपालन में अप्रैल, 2012 मे भूटान के तत्कालीन प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में "खुशी एवं अच्छे रहन सहन" पर आधारित संयुक्त राष्ट्र उच्च स्तरीय सम्मेलन आहूत किया गया था। इस सम्मेलन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर वर्ष 2012 में पहली बार संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट प्रकाशित की और वर्ष 2013 में द्वितीय, वर्ष 2015 में तृतीय रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमें भारत का स्थान 157 देशों मे से 117 वें स्थान पर था, चौथी रिपोर्ट वर्ष 2016 में 118 वॉ, वर्ष 2017 में 122 वॉ, वर्ष 2018 में 133 वॉ एवं वर्ष 2019 में प्रकाशित रिर्पोट में भारत का स्थान 7 स्थान नीचे खिसककर 140 वें स्थान पर आ गया है। प्रथम स्थान पर फिनलैण्ड व द्वितीय स्थान पर डेनमार्क रहा। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रत्येक वर्ष 20 मार्च को विश्व प्रसन्नता के रूप में मनाया जाता है। भारत में भी एक खुशी विभाग का गठन मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 15 जुलाई 2016 को किया गया है। इसके पश्चात् दिल्ली सरकार द्वारा भी वर्ष 2018 से नर्सरी से कक्षा 8 तक के विद्यालयों में एक 45 मिनट का '**हैप्पीनेस**' कालांश प्रारम्भ किया गया है तत्पश्चात् वर्ष 2019 से उत्तराखण्ड और आंध्र प्रदेश के अलावा लददाख, तमिलनाडु, तेलंगाना और झारखण्ड राज्य भी इस कोर्स में अपनी रूचि दिखाने लगे है। हैप्पीनेस पाठ्यक्रम ध्यान, मूल्य शिक्षा, और मानसिक अभ्यास सहित समग्र शिक्षा पर केद्रित है। यह पाठ्यक्रम शारीरिक और मानसिक कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा, गुस्सा, नफरत और ईर्ष्या जैसी नकारात्मक और विध्वंसकारी भावनाओं के चलते पैदा होने वाले संकट का हल करेगा।

वर्तमान समय में विश्व के सभी देशों में आज विकास के पथ पर एक दूसरे से आगे निकल जाने की होड़–सी मची है, और इसके लिए औद्योगीकरण से लेकर प्राकृतिक संसाधनों के दोहन तक के हर संभव प्रयास किये जा रहे है और इन सबकी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पूर्ति शिक्षा द्वारा ही संभव है क्योकि शिक्षा को समग्र विकास की धुरी माना जाता है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों का जीवन तनाव, चिन्ता, निराशा, अस्थिरता एवं कुण्ठा आदि से भरा हुआ है। इसका कारण विद्यालयों का पाठयक्रम एवं गृहकार्य है जिस वजह से बच्चों के पास खेलने तक का समय नही मिलता है। आज प्रत्येक बच्चे का बचपन खत्म होता जा रहा है, धीरे–धीरे जब बालक विद्यालय में माध्यमिक स्तर की ओर बढ़ता है, इस दौरान उसमें शारीरिक, सामाजिक, सांवेगिक तथा मानसिक बदलाव के साथ–साथ बदलते समाज के परिवेश को ध्यान में रखते हुए भविष्य की तैयारी तथा अभिभावकों की उम्मीदों का बोझ किशोरावस्था में उसके उपर बढ़ने लगता है। उपरोक्त समस्याओं के समाधान में विद्यालय का वातावरण एक विद्यार्थी को अत्यधिक प्रभावित करता है। शैक्षिक उपलब्धि जीवन संतुष्टि से निश्चित रूप से प्रत्यक्षतः संबधित नही है किन्तु शिक्षा जीवन संतुष्टि को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। मनुष्य एक बेहतर भविष्य के लिए प्रयासरत रहता है शिक्षित व्यक्ति अपेक्षाकृत अशिक्षित व्यक्ति से अपने जीवन को अधिक आनन्दमय एवं सुखी बना सकता है। इसलिए हम कह सकते है कि प्रसन्नता एवं शिक्षा में एक धनात्मक संबंध पाया जाता है जो व्यक्ति जितना शिक्षित होगा उसमें प्रसन्न रहने तथा काम करने का स्तर अधिक व अच्छा पाया जायेगा।

अतः शोधकर्ता ने उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर को जानने हेतु शोध कार्य करने का निर्णय किया है तथा इस शोध कार्य के माध्यम से उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य प्रसन्नता स्तर की स्थिति को जानने का प्रयास किया जायेगा।

समस्या कथन

"ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर का उनके विद्यालय वातावरण के संदर्भ में अध्ययन।"

अध्ययन के उददेश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उददेश्य तथा प्रयोजन यह ज्ञात करना है कि एक विद्याार्थी निवास के आधार पर किस सीमा तक प्रसन्न रहता है। इस अध्ययन के मुख्य उददेश्य हैः–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके विद्यालय वातावरण के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।
3. शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके विद्यालय वातावरण के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनायेंः–

प्रस्तुत अनुसन्धान के उददेश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गई हैः–

1. ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके विद्यालय वातावरण के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।
2. शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके विद्यालय वातावरण के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

शोध की परिसीमाऐं

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अल्मोडा जनपद के 6 विकासखण्ड अर्न्तगत 25 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11 व 12 के ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य के उचित क्रियान्वयन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर का अध्ययन करने के लिए विभिन्न शिक्षण संस्थाओं से 850 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में याद्धच्छित न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। 850 विद्यार्थियों में 546 ग्रामीण तथा 304 शहरी विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत शोध उपकरण

व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र–विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्याार्थियों के नाम, निवास, लिंग, कक्षा एवं आयु से सम्बन्धित सूचनायें प्राप्त करने के लिए अनुरोध पत्र का प्रयोग किया गया।

प्रसन्नता मापनीः–प्रसन्नता स्तर के मापन के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वःनिर्मित उपकरण मापनी का प्रयोग किया गया हैं तथा डा0 हिमांशी रस्तोगी एवं डा0 जानकी मूरजेनी द्वारा निर्मित प्रसन्नता मापनी की भी सहायता ली गयी है।

विद्यालय वातावरण मापनीः–उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण स्तर ज्ञात करने के लिए डा0 के0 एस0 मिश्रा द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण मापनी का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी प्रविधियॉं–प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु पिर्यसन सह–संबंध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उददेश्यः–1. ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके विद्यालय वातावरण के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।

तालिका–1

ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके विद्यालय वातावरण के मध्य सह–संबंध का तुलनात्मक विवरण–

आश्रित चर	स्वतंत्र चर विद्यालय वातावरण (आयाम)	स्वतंत्रता अंश (df)	सह–संबंध गुणांक (r)	परिणाम
प्रसन्नता स्तर	सृजनात्मक –उददीपन	544	0.108*	सार्थक
	संज्ञानात्मक –प्रोत्साहन	544	0.163**	सार्थक
	अनुमोदन	544	0.107*	सार्थक
	स्वीकृति	544	–0.029	असार्थक
	अस्वीकृति	544	–0.314**	सार्थक
	नियंत्रण	544	0.061	असार्थक

**⟶ 0.01 सार्थकता स्तर।

* ⟶ 0.05 सार्थकता स्तर।

परिकल्पना **"ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके विद्यालय वातावरण के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।"** उपरोक्त तालिका में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर एवं उनके विद्यालय वातावरण के 6 आयामों के मध्य सह–संबंध गुणांक को प्रदर्शित किया गया है। स्वतंत्रता अंश **(df=544)** पर प्रसन्नता के साथ विद्यालय वातावरण के आयाम **संज्ञानात्मक प्रोत्साहन** का गुणांक 0.163 एवं **अस्वीकृति** का गुणांक –0.314 है जो कि r तालिका में सार्थकता स्तर 0.01 के मान 0.115 से अधिक है। विद्यालय वातावरण के अन्य आयाम **सृजनात्मक उददीपन** का r गुणांक 0.108 एवं **अनुमोदन** का गुणांक 0.107, है जो कि r तालिका में सार्थकता स्तर 0.05 के मान 0.088 से अधिक है तथा सार्थकता स्तर 0.01 के मान 0.115 से कम है।

अतः यह मान इंगित करता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर एवं उनके विद्यालय वातावरण के आयामो **संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, सृजनात्मक उददीपन एवं अनुमोदन** में अति निम्न सार्थक धनात्मक सह–संबंध पाया गया है। अर्थात उपर्युक्त आयामों की अधिकता होने पर विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में वृद्धि होती है, तथा **अस्वीकृति** में निम्न सार्थक ऋणात्मक सह–संबंध पाया गया है। अर्थात विद्यालय वातावरण के अन्तर्गत अध्यापकों की स्वीकृति प्राप्त न होने पर विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में कमी पायी गयी है। अतः उक्त विद्यालय वातावरण के आयामो हेतु **शून्य परिकल्पना अस्वीकृत** की जाती है। प्रसन्नता स्तर एवं विद्यालय वातावरण के आयामो **स्वीकृति एवं नियंत्रण** के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया गया है। अतः उक्त विद्यालय वातावरण के आयामो हेतु **शून्य परिकल्पना स्वीकृत** की जाती है।

उददेश्यः–2. शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके विद्यालय वातावरण के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।

तालिका–2

शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालकों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके विद्यालय वातावरण के मध्य सह–संबंध का का तुलनात्मक विवरण–

आश्रित चर	स्वतंत्र चर विद्यालय वातावरण (आयाम)	स्वतंत्रता अंश (df)	सह–संबंध गुणांक (r)	परिणाम
प्रसन्नता स्तर	सृजनात्मक–उददीपन	302	0.142*	सार्थक
	संज्ञानात्मक–प्रोत्साहन	302	0.123*	सार्थक
	अनुमोदन	302	0.126*	सार्थक
	स्वीकृति	302	0.048	असार्थक
	अस्वीकृति	302	–0.175**	सार्थक
	नियंत्रण	302	0.089	असार्थक

**⟶ 0.01 सार्थकता स्तर।

* ⟶ 0.05 सार्थकता स्तर।

परिकल्पना **"शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालकों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके विद्यालय वातावरण के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।"** उपरोक्त तालिका में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर एवं उनके विद्यालय वातावरण के 6 आयामों के मध्य सह–संबंध गुणांक को प्रदर्शित किया गया है। स्वतंत्रता अंश **(df=302)** पर प्रसन्नता के साथ विद्यालय वातावरण के आयाम **अस्वीकृति** का गुणांक –0.175 है जो कि r तालिका में सार्थकता स्तर 0.01 के मान 0. 148 से अधिक है। विद्यालय वातावरण के अन्य आयाम **सृजनात्मक उददीपन** का r गुणांक 0.142, **संज्ञानात्मक प्रोत्साहन** का गुणांक 0.123 एवं **अनुमोदन** का गुणांक 0.126 है जो कि r तालिका में सार्थकता स्तर 0.05 के मान 0.113 से अधिक है तथा सार्थकता स्तर 0.01 के मान 0.148 से कम है।

अतः यह मान इंगित करता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर एवं उनके विद्यालय वातावरण के आयामो **संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, सृजनात्मक उददीपन एवं अनुमोदन** में अति निम्न सार्थक धनात्मक सह–संबंध पाया गया है। अर्थात उपर्युक्त आयामों की अधिकता होने पर विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में वृद्धि होती है, तथा **अस्वीकृति** में अति निम्न सार्थक ऋणात्मक सह–संबंध पाया गया है। अर्थात विद्यालय वातावरण के अन्तर्गत अध्यापकों की स्वीकृति प्राप्त न होने पर विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में कमी होती है। अतः उक्त विद्यालय वातावरण के आयामो हेतु **शून्य परिकल्पना अस्वीकृत** की जाती है। प्रसन्नता स्तर एवं विद्यालय वातावरण के आयामो **स्वीकृति एवं नियंत्रण** के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया गया है। अतः उक्त विद्यालय वातावरण के आयामो हेतु **शून्य परिकल्पना स्वीकृत** की जाती है।

निष्कर्ष–

1. ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर एवं उनके विद्यालय वातावरण के आयाम संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, सृजनात्मक उददीपन एवं अनुमोदन में अति निम्न सार्थक धनात्मक सह–सम्बंध पाया गया है, अर्थात उपर्युक्त आयामों की अधिकता होने पर विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर में वृद्धि होती है, तथा अस्वीकृति में निम्न सार्थक ऋणात्मक सह–सम्बंध पाया गया है, अर्थात विद्यालय में शिक्षको से अस्वीकृति प्राप्त होने पर विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में कमी आती है। प्रसन्नता स्तर एवं विद्यालय वातावरण के आयाम स्वीकृति एवं नियंत्रण के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बंध नहीं पाया गया।
2. शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर एवं उनके विद्यालय वातावरण के आयाम संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, सृजनात्मक उददीपन एवं अनुमोदन में अति निम्न सार्थक धनात्मक सह–सम्बंध पाया गया है, अर्थात उपर्युक्त आयामों की अधिकता होने पर विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर में वृद्धि होती है, तथा अस्वीकृति में अति निम्न सार्थक ऋणात्मक सह–सम्बंध पाया गया है, अर्थात विद्यालय में शिक्षको से अस्वीकृति प्राप्त होने पर विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में कमी आती है। प्रसन्नता स्तर एवं विद्यालय वातावरण के आयाम स्वीकृति एवं नियंत्रण के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बंध नहीं पाया गया।

शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यालय में प्रसन्नता व विद्यालय वातावरण के आयाम संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, सृजनात्मक उददीपन, अनुमोदन एवं नियंत्रण में अति निम्न सार्थक धनात्मक सह–सम्बंध पाया गया है, अर्थात उपर्युक्त आयामों की अधिकता होने पर विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर में वृद्धि होती है, तथा अस्वीकृति में निम्न सार्थक ऋणात्मक सह–सम्बंध पाया गया है, अर्थात विद्यालय में विद्यार्थियों को किसी कार्य के लिए अस्वीकृति प्राप्त होने पर विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में कमी आती है। प्रसन्नता स्तर एवं विद्यालय वातावरण के आयाम स्वीकृति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। विद्यालय में कक्षाओं का वातावरण अच्छा बनाया जाना चाहिए तथा कक्षाओं में उचित प्रकाश, बैठने की व्यवस्था इत्यादि अच्छी होनी चाहिए। विद्यालय का प्रशासन भी विद्यार्थियों के अनुरूप होना चाहिए तथा समय–समय पर विद्यालय में ध्यान, योगा एवं नवाचार इत्यादि गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए। विद्यालय के वातावरण को सोहार्दपूर्ण बनाया जाये। विद्यालय में पर्याप्त रूप से शिक्षकों की व्यवस्था बच्चों के अनुरूप होनी चाहिए। वर्तमान समय में उपरोक्त बिन्दुओं में सामजस्य आवश्यक है जिससे भविष्य में मानसिक रूप से सुखमय समाज की स्थापना कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल एंव पुरी (2017) "ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ एडजैस्टमेन्ट एण्ड हैप्पीनैस बिटवीन गर्ल्स एंड ब्वायज" दी इन्टरनेशनल जनरल ऑफ इन्डियन साइकोलोजी, वाल्यूम 4।
2. आनन्द व अन्य (2012), "इम्पैक्ट आफ नालेज बैल्यू ऑन लाईफ सेटिसफैक्शन" अमॉग एडोलशन्स, लोकायता, जनरल आफ पॉलिटिव फिलोसॉफी, रामन एण्ड लिटिलफील्ड पब्लिशिंग ग्रुप, वाल्यूम–2, नम्बर–01, पृष्ठ (67–72)।
3. एन्ड्रयूस व विथे (1976), "सोशल इन्डिकेटर्स ऑफ बेल–विईग" अमेरिकन परसैप्शन आफ लाईफ, क्वालिटि, न्यूयार्क, प्लेनम प्रेस।
4. बेस्ट, जे, डब्लू (1990), "रिसर्च इन ऐजुकेशन" ऐन्गलबुड क्लीफस, एन0जे0, प्रिन्टिस हॉल इन्क।

5. डाईनर व शूह (2004), "सब्जैक्टिव बेल–विईग" अक्रोस कल्चर, कैम्बिज एम0आई0टी प्रेस, डिन्सर एम0के0 ऐडुकेटर्स रोल एज स्प्रिच्यूली इन्ट्रेलीजैन्ट लीडर्स इन ऐजुकेशनल इन्सट्यूशन्स।
6. डेमो एण्ड एकाक (1996) "फैमिली स्ट्रक्चर, फैमिली प्रोसेज एण्ड एडोलसेन्स वेल विईग " जरनल आफ रिसर्च आन एडोलेसेन्स, ब्लेकवेल पब्लिसिंग, वाल्यूम 6 पृष्ट 457–488।
7. डिनर एण्ड डिनर (1995) "क्रास कल्चरल कोर रिलेटिएटस ऑफ लाइफ सेटिस्फैक्शन एण्ड सेल्फ इस्ट्रीम" जरनल पर्सेनिलिटी एण्ड सोसल साइकोलॉजी, अमेरिकन साइकोलोजिकल एसोसिएसन (यू0एस0ए0) वाल्यूम 68 ,पृष्ट 653–663।
8. अघीली एवं कुमार (2008) "रिलेशनशिप बिटविन रिलीजियस एटीट्यूट एण्ड हैप्पीनैस अमॉग प्रोफेशनल इम्पालोईज" जनरल ऑफ दी इन्डियन एकेडमी ऑफ अप्पलाइड साइकोलॉजी,वाल्यूम 34,पृ0 66–69।
9. ग्रासमैन एण्ड रोवट, (1995) "पैरेन्टल रिलेशनशिप कोपिंग स्ट्रेटेजीस रिसीक " सपोर्ट एण्ड वेल विइंग इन एडोलसेन्स आफ सेपरेटेड आर डिवोसेर्ड एण्ड मैरिड पैरेन्टस,रिसर्च इन नर्सिग एण्ड हेल्थ,वाल्यूम 18 पृष्ट 249–261।
10. गैरेट एण्ड बुडवर्थ (1973), "स्टेटिसटिक्स इन ऐजुकेशन एण्ड साईकोलॉजी" बोम्बे, बेक्लिस फिफर, सिमसन, प्राईवेट लि0 बोम्बे।
11. गिलमन आर (2001) "दि रिलेशनशिप विटविन लाइफ सटिस्फैक्शन " सोसल इंटरेस्ट एण्ड फ्रेक्वेन्सी आफ एक्स्टाक्यूरिलकलर, एक्टिविटीज एमंग एडोलसेन्स, स्टूडेन्स जरनल आफ यूथ एण्ड एडोलेसेन्स, ए मल्टी डिसिप्लेनरी रिसर्च पब्लिकेषन, वाल्यूम 30 पृष्ट 749–767।
12. गुप्ता व अन्य, "एडवान्श ऐजुकेशनल साइकोलॉजी " शारदा पुस्तक भवन, पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन्स, यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद।
13. हयूवनर व अन्य (1998) "फर्दर वैलिडेशन आफ दी मल्टी डाइमेन्शनल" स्टूडेन्ट लाइफ सेटिस्फैक्शन स्केल, जर्नल आफ साइको एजुकेशनल एसेसमेन्ट थाउजेन्ड ओक्स, सी0ए0 सेज पब्लिकेशन्स वाल्यूम 16 पृष्ट 118–131।
14. ज्यूलिंग व अन्य (2005 ए), "एडोलसेन्ट हैल्थ रिलेटेड क्यूलिटी आफ लाईफ एण्ड परसीव्ड" सैटिस्फैक्शन विद लाईफ, क्यूलिटी आफ लाईफ रिसर्च,एन इन्टरनेशनल जनरल आफ लाईफ आसपैक्ट आफ ट्रीटमैन्ट, केयर एण्ड रिहेवीलाइटेशन, आक्सफोर्ड, यू0के0, रेपिड कम्यूनिकेशन आफ आक्सफोर्ड, लि0 सी0 1992, वाल्यूम 14, पृष्ठ (1573–1584)।
15. कबिल व अन्य, "एलीमेन्टस आफ स्टेटिसटिक्स " (सामाजिक अध्ययन में) विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2।
16. कॉल लोकेश (1997), "मेथोलॉजी आफ एजुकेशन रिसर्च, विकास पब्लिशिंग हाउस, प्राईवेट लि0, नोयडा।

Website Reference

- www.icds-wcd.nic.in
- www.socialwelfare.uk.gov.in
- www.uttaranvani.com
- www.wikipedia.com
- www.shodhganga.inflibnet.ac.in.

RRIJM 2015, All Rights Reserved